

पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

आपने कभी होम्योपैथी दवाई का सेवन किया है? वैसे कभी ना कभी तो किया ही होगा। उसमें डॉक्टर आपकी नेचर 'modelities' को चेक करते हैं। उसमें लक्षण 'symptoms' मैच करते हैं, फिर दवाई देते हैं। अगर आपने अपनी नेचर सही बताई तो दवाई सूट करती है, वरना नहीं।

वैसे ही हमारा मन, जो वाइटल फोर्स का एक भाग है, वो भी वैसे ही कार्य करता है। अगर आप अपनी नेचर को नहीं समझ पा रहे हैं, तो आपकी अपनी चमत्कारिक शक्ति काम ही नहीं करेगी। क्योंकि हमारी नेचर हमें अच्छी तरह से पता है, अगर आपने डॉक्टर को नहीं बताया, तो कैसे आप ठीक होंगे! इतने छोटे छोटे दुःख दर्द हैं, कि उन्हें बर्बाद ना करना, अर्थात् ना निकालने की वजह से ही शान्ति हमारे अंदर नहीं आ रही है। फिर कैसे होंगे आपसे चमत्कार! कहीं



किसी के लिए वृत्ति में कुछ है, अर्थात् पूरी तरह से नजरिया हर किसी के लिए बदला हुआ नहीं है। तभी जब आप संकल्प कर रहे हैं, वो फलीभूत भी नहीं हो रहे हैं, मात्र एक कारण से, वो है हमारी नेचर। इतनी छोटी छोटी बातों की अशांति हमारे मन में भरी हुई है। इस अशांति मन से क्या आप जो सोच रहे हैं, वो होगा!

इसकी वजह को ढूंढा जाए तो शायद हम यही पायेंगे कि कुछ ऐसा है, जो मिसिंग है। वो है अपनी जिन्दगी को न समझ पाना। जिन वस्तुओं के उपयोग से आप थोड़ा बहुत खुश होते, वे तो आपके पास हैं ही, लेकिन न होने से हम दुःखी भी बहुत हो जाते हैं। अर्थात् मटिरियलिस्टिक वर्ल्ड आपके मन को कमजोर कर रहा है। वही हमारे अंदर की नेचर बन गई है। एक है स्थूल 'gross' नेचर, तथा दूसरी है उस

नेचर अर्थात् चीजों से सुख पाने की नेचर की वजह से लोगों से भी सुख पाने की चाहना बढ़ती जा रही है। आप देखो क्या हो रहा है, बस चाहना, भले आप ना कहें, लेकिन कुछ चाहिए, क्या चाहिए, वो हमें पता नहीं चल रहा है।

निश्चित रूप से मन तो शक्तिशाली हो ही जायेगा, यदि उसे समझा दिया जाए कि सबकुछ नश्वर है, उसके कारण आपके विचार में जो वृत्ति भरी हुई हो, वह बदल जायेगी तो आप शक्तिशाली तो हो ही जायेंगे ना! हो क्या रहा है, कि शक्तियाँ हैं छुपी हुई, लेकिन बाहर तभी तो आयेंगी, जब उनपर से पर्दा उठेगा। आप बाहर कहीं भी जाओ, वहाँ कोई भी जो थोड़ा बहुत ज्योतिष वास्तु या फिर फेंगशुई आदि जानता होगा, वहाँ सिर्फ एक बात पर ही फोकस होता है कि आपका जीवन अच्छा हो जायेगा, लेकिन यह उपाय करो।

लेकिन यह उपाय भी कैसे, आप ये व्रत रख लें, यह अंगूठी पहन लें, यह ना खायें, यह खायें, इस चीज का दान करें। इसमें सबकुछ वस्तुओं से ही तो जुड़ा हुआ लगता है। और पाना क्या है? वस्तु! फिर से दुबारा वस्तु को पाने के लिए वस्तु को ही दाव पर लगा दिया। यह जीवन नहीं, बल्कि जीवन को चलाने के लिए स्थूल वस्तुओं को इकट्ठा करने के लिए है। इसमें भी तो मानसिक स्थिति काम कर रही है। कुछ भी पाना है, उसमें आप संकल्प ही तो कर रहे हैं ना! व्रत रखते भी संकल्प, दान करते भी संकल्प, अंगूठी पहनते भी संकल्प, यह करके यह हो जायेगा, तभी तो सारा कुछ करते जा रहे हैं आप। बस इसी संकल्प को मोड़ना है, स्थूल पर ना खर्च कर सूक्ष्म पर केन्द्रित करना है।

अभी तक तो आपका जीवन शरीर के साथ ही जुड़ा है, लेकिन इसके आगे का भी जीवन आज के संकल्पों के आधार से ही होगा। अगर स्थूलता से थोड़ा निकल कुछ अच्छे संकल्प अपने लिए, समाज और समुदाय के लिए करने लग जायें तो चमत्कार होगा ही होगा।

क्या आपने कभी खुद को खुश रखने की कोशिश की है? कभी ऐसा हुआ है कि आप स्वयं से ही सुखी हो गए? यह सवाल इसलिए उठता है कि हम लोग अधिकांश मौकों पर अपनी खुशी के लिए दूसरों को माध्यम बनाते हैं। खुशी को हम कभी मोबाइल में ढूँढ़ते हैं, कभी दूसरों में तलाशते हैं। कई लोगों ने तो नियम ही बना लिया है कि हम

स्वयं को स्वयं ही



तब ही खुश रह पाएंगे जब कोई दूसरा हमें खुश रखेगा। धीरे-धीरे यह शिकायत बढ़ती जाती है। और फिर कहते हैं कि हमने दूसरों को सुख देने में कोई कसर नहीं छोड़ी, पर वक्त आने पर उन लोगों ने हमें दुःख पहुंचाया। यह आरोप एक और अशांति को जन्म देता है। जाने-अनजाने में हम दुःख ढूँढ़ने में माहिर होते जा रहे हैं। एक आदत सी पड़ जाती है चुन-चुनकर दुःखों को जीवन से जोड़ने की। घर परिवार में कोई उत्सव भी हो और जिन्हें दुःखी रहने की ही आदत है, वे कहीं न कहीं उसमें भी दुःख ही तलाशते हैं और मिल जाये तो कारण दूसरों पर थोपते हैं। इस सबकी शुरुआत यहीं से होती है कि हमने अपने आपको कभी खुश किया ही नहीं और जब भी दुःखी हुए, कारण दूसरे में ढूंढ़ा। हमारे पास स्वयं को खुश रख पाने की असीम संभावना है। खुद को प्रसन्न रखने के कई तरीके हो सकते हैं, उनमें से एक है स्वाध्याय। कभी अकेले में बैठकर अपना मूल्यांकन कीजिए। पाएंगे, आपके पास खजाने भरे हैं खुद को खुश रख पाने के। कोशिश कीजिए, यदि एक बार स्वयं को खुश रखना सीख गए तो फिर दूसरों की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।

शीघ्र आवश्यकता

ग्लोबल हॉस्पिटल स्कूल ऑफ नर्सिंग, शिवमणि होम के पास, तलहटी आबूरोड, सिरोंही राजस्थान में दो नर्सिंग ट्यूटर्स की आवश्यकता है।
योग्यता : मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से बी.एस.सी. नर्सिंग अथवा पोस्ट बेसिक बी.एस.सी. नर्सिंग
अनुभव : मान्यता प्राप्त शिक्षण संस्थान अथवा अस्पताल में कम से कम दो वर्ष का अनुभव
संपर्क करें : मोबाइल नं: 9927652140
ई मेल : ghsn.abu@gmail.com

आवश्यकता

ग्लोबल अस्पताल मा आबू में ट्रान्सपोर्ट विभाग में सेवा के लिए एक भाई की आवश्यकता है, जिसे ट्रान्सपोर्ट वाहनों की तकनीकी जानकारी, रख रखाव व यातायात कार्य प्रणाली का अच्छा अनुभव हो। सुरक्षा सेवाओं के जी सी ओ रैंक के मोटर ट्रान्सपोर्ट कोर्स किये हुए अनुभवी ब्र कु भाई को प्राथमिकता दी जायेगी।
उचित वेतन सुविधा, संपर्क करें : 9413375360



दिल्ली-लोधी रोड। सनातन धर्म मंदिर में कार्यक्रम के दौरान मंचासीन हैं माननीय मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल, ब.कु. पीयूष, ब.कु. गिरिजा तथा अन्य।



शांतिवन। 'रेज्युवनेट विद पीस इन टेक्नोलॉजी कॉन्फ्रेंस 2018' का उद्घाटन करते हुए ब.कु. आशा, ब.कु. अरुणा, ब.कु. यशवंत तथा विशिष्ट अतिथिगण।



वदायूं-उ.प्र.। सेवाकेन्द्र पर 'जनपदीय ग्राम प्रधान सम्मेलन' में सम्बोधित करते हुए ब.कु. तृप्ति। मंचासीन हैं ब.कु. सरोज, सिटी मजिस्ट्रेट संजय सिंह, ग्राम प्रधान संगठन के महामंत्री सोनपाल साहू, नगर विधायक महेश चन्द्र गुप्ता तथा ग्राम प्रधान जिला अध्यक्ष धरवेन्द्र सिंह।



वाराणसी-उ.प्र.। काशी हिन्दु विश्वविद्यालय, वाराणसी के प्रसिद्ध मनोचिकित्सक प्रो. डॉ. संजय गुप्ता को रक्षासूत्र बांधते हुए ब.कु. अंजलि। साथ हैं श्रीमति गुरमीत गुप्ता।



दिल्ली-ओम विहार। रीयल केश टेक्नोलॉजीज लि. सुभाष नगर दिल्ली में 'स्ट्रेस मैनेजमेंट' विषय पर सम्बोधित करने के पश्चात् समूह चित्र में ब.कु. विमला, डायरेक्टर हितेश छाबड़ा, एच. आर. लवली बहन तथा स्टाफ।



सीकर-तोदी नगर(राज.)। शिव संदेश रथ यात्रा द्वारा 'राजयोग से स्वच्छ नशामुक्त भारत अभियान' का शुभारम्भ क रते हुए ब.कु. मधु, ब.कु. जगदीश, माउंट आबू, ब.कु. प्रकाश, बाड़मेर, ब.कु. विजय तथा अन्य।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहली-2 (2018-2019)



ऊपर से नीचे

- रूहानी नशा, रूहानी फक्र (3)
- उपस्थित, मौजूद (3)
- संख्या, एक प्रकार के पत्थर का आभूषण (2)
- खुदा, भगवान, ईश्वर (2)
- अदब, इज्जत, लाज (3)
- भार, तौल (3)
- घूँघट, चेहरा ढकने के लिए जालीदार कपड़ा (3)
- नशा, स्वमान (3)
- आकाश, गगन, अम्बर (2)
- कस्बा, छोड़....का
- शोर चलो हम चलें गांव की ओर (3)
- समझ, ज्ञान, पाठ, शिक्षा (2)
- खोज, ढूँढ़ना (3)
- कठिन, माया बड़ी....है (3)
- समस्या स्वरूप नहीं....स्वरूप बनो, हल (4)
- मौका, सुयोग, अवकाश (4)
- पंक्ति, रेखा (3)
- तुम्हारा जन्म.... कर्तव्यों के लिए हुआ है, श्रेष्ठ (3)
-मान, शान की बीमारी से स्वयं को मुक्त रखना है (2)

बायें से दायें

- अमृतवेले उठ बाप से.... करनी है, वार्तालाप (5)
- हनुमान, शक्तिशाली, ताकतवर (4)
- हृदय, दिल (3)
- कुर्बान, समर्पण (4)
- बोल, कथन (3)
- कर्ण, श्रवणेंद्रिय (2)
- दृष्टि, ...से निहाल कींदा स्वामी (3)
- खुश किस्मत, बड़ा.... है जो तेरे करीब है (5)
- प्रकार, उस जैसा (3)
- दुपट्टा, अंगवस्त्र (3)
- स्वाद, सुखद तत्व, जलीय अंश, शोरबा (2)
- मदार, कोई-कोई.... के भी फूल होते हैं (2)
- मदयुक्त, नशे में चूर (2)
- महफिल में जल उठी.... परवाने के लिए (2)
- इन्सानियत, मनुष्यता (4)
- पराजित होना, असफल होना (3)
- श्रीकृष्ण की मुख्य प्रेमिका (2)
- सिर, मस्तक (2)
- मानव, इंसान (3)
- विनाशी, नष्ट होने वाला (3)

- ब.कु. राजेश, शांतिवन।